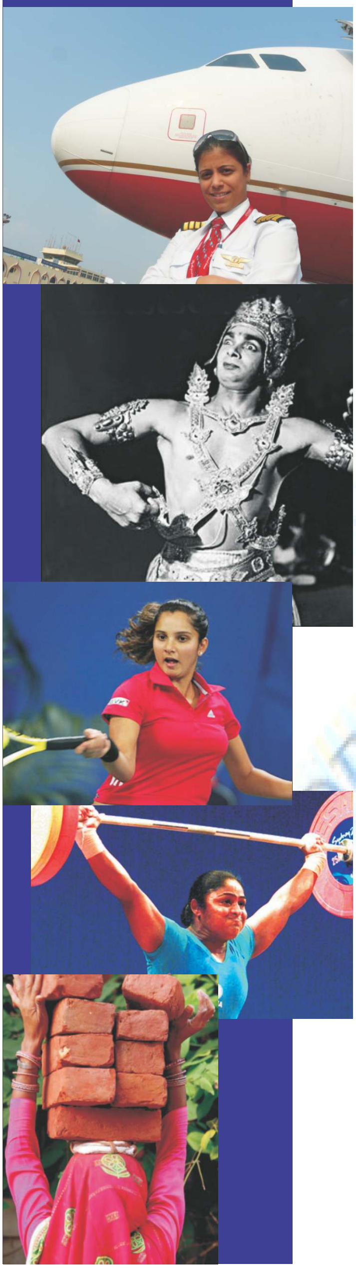

अध्याय 4

समाज में लिंग भेद

आमतौर पर हमारी पहचान स्त्री और पुरुष के रूप में होती है। स्त्री और पुरुष के रूप में समाज में हमारी भूमिका कैसे तय होती है? क्या उसमें बदलाव की ज़रूरत है? इस पाठ में हम इन प्रश्नों पर चर्चा करेंगे।

नीचे दिए वाक्यों में आप अपनी समझ के अनुसार 'लड़का', 'लड़की' या लड़का-लड़की दोनों भरें.....

कुछ लोग कहते हैं,

जिसके लम्बे बाल हों, वह .... है।

जो पेड़ पर चढ़ जाए, वह .... है।

जो जेवर पहने, वह .... है।

जो ताकतवर है, वह .... है।

जो शर्माए, वह .... है।

जो हाट-बाज़ार जाए, वह .... है।

जो फुटबॉल खेले, वह .... है।

जो घर के काम करे, वह .... है।

जो खेतों में काम करे, वह .... है।

जो नर्सिंग का काम करे, वह .... है।

जो कुश्ती लड़े, वह .... है।

लड़की क्या है ? लड़का क्या है ?

बच्चा जब पैदा होता है तो वह
लड़की होती है या लड़का
लड़की क्या होती है ?
कुछ लोग कहते हैं जिसके लम्बे बाल हों
वह लड़की है।
समीर के बाल लम्बे हैं
पर वह तो लड़का है
कुछ लोग कहते हैं जो जेवर पहने वह
लड़की हैं
मदन माला पहनता है और
कानों में बाली भी पहनता है
और वह लड़का है।
लड़का क्या होता है ?
कुछ लोग कहते हैं जो नेकर (हाफ पैन्ट)
पहने और पेड़ों पर चढ़ पाये
वह लड़का है।
शांति नेकर पहनती है, झट पेड़ पर
चढ़ जाती है और वह तो लड़की है।
कुछ लोग कहते हैं जो ताकतवर हो
और भारी बोझ ढो पाये वे लड़के हैं
सईदा और नफीसा दो-दो मटके या
लकड़ी के गट्ठर उठाती हैं
वह लड़की है ।

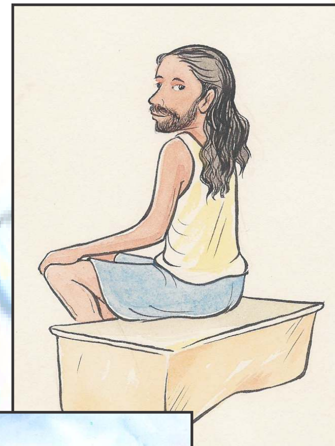

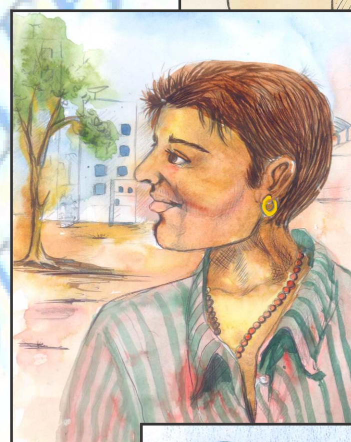

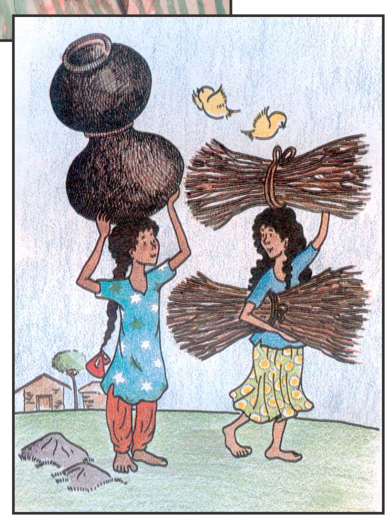

साभारः लड़की क्या है लड़का क्या है ?
: कमला भसीन, जागोरी द्वारा प्रकाशित पुस्तिका

नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दें–

- अगर किसी लड़की के बाल छोटे हों, तो क्या आप मजाक उड़ाते हैं ?
- कोई लड़का माला या कान में बाली पहनता है, तो क्या वह लड़कियों जैसा हो जाता है ?
- परिवार में लड़कियों द्वारा किए जाने वाले कार्यों की सूची बनाएँ। इनमें से कौन से कार्य हैं, जो लड़के नहीं कर सकते और क्यों ?
- क्या लड़कियाँ लड़कों के समान मैदानों में खेलने जाती है? अगर नहीं, तो क्यों नहीं जाती हैं ?
- अगर आप लड़की हैं, तो क्या बड़ी होकर सुरक्षा बल में काम करना पसन्द करेंगी, और अगर आप लड़का हैं, तो क्या नर्सिंग की ट्रेनिंग लेना पसन्द करेंगे? हाँ तो क्यों और नहीं तो क्यों नहीं ?

लिंग मनुष्य की जैविक संरचना है। प्रजनन अंग यह निर्धारित करते हैं कि हम स्त्री हैं या पुरुष। बच्चों को जन्म देने एवं स्तनपान जैसे कार्य महिलाओं के विशिष्ट एवं प्राकृतिक गुण होते हैं। यह फर्क जैविक संरचना के कारण होता है। अक्सर लोग 'जेंडर' का अर्थ लिंग यानी स्त्रीलिंग व पुँल्लिंग के लिए करते हैं। यह एक गलत धारणा है। 'जेंडर' हमारे सामाजिक व्यवहार को दर्शाता है। सामाजिक रूप से यह तय होता है कि महिला एवं पुरुष को क्या पहनना चाहिए, क्या काम करना चाहिए, कैसे व्यवहार करना चाहिए आदि। ये सभी लिंग भेद, 'जेंडर' या सामाजिक लिंग कहलाते हैं। समय के साथ-साथ समाज बदलता है। इस तरह सामाजिक लिंग की परिभाषा भी बदलती है।

मैं लड़की हूँ, और
मैं क्रिकेट खेलती हूँ।

मैं लड़का हूँ, और
मुझे स्वेटर बुनना
बहुत पसन्द है।

हमें इससे कोई परेशानी नहीं तो फिर समाज परेशान क्यों ???

जैसे-कई वर्ष पूर्व लड़कियों को स्कूल नहीं जाने दिया जाता था। लेकिन अब इस सोच में कुछ परिवर्तन आया है।

लड़के और लड़कियों का विकास

परिस्थिति–1 : जावेद और शबाना का बड़ा होना

खुर्शीद और उनकी पत्नी रेशमा दोनों सरकारी कर्मचारी हैं। उनके दो बच्चे हैं, शबाना और जावेद। शबाना सातवीं कक्षा की छात्रा है, और जावेद आठवीं कक्षा का छात्र। सुबह उठ कर परिवार के सारे लोग एक नियमित दिनचर्या के अनुसार अपने-अपने कामों में लग जाते हैं। चाय पीने के बाद खुर्शीद घर की सफाई करते हैं, रेशमा रसोईघर का काम संभालती है। बच्चे सारे कमरों का बिस्तर ठीक कर पढ़ने बैठ जाते हैं। नाश्ता करने के बाद शबाना और जावेद अपने अलावा माँ और पिता के लिए भी लंच बॉक्स तैयार करते हैं। शाम को विद्यालय से लौटने के बाद दोनों हाफ पैंट और टी-शर्ट पहन कर क्रिकेट खेलने नजदीक के मैदान में चले जाते हैं। दोनों अपने स्कूल की क्रिकेट टीम के सदस्य हैं। जावेद लड़कों की टीम का सदस्य है और शबाना लड़कियों की टीम की कप्तान है। दोनों बड़े होकर देश के लिए खेलना चाहते हैं। इस सपने को पूरा करने के लिए इनके माता-पिता पूरी तरह से इन्हें सहयोग करते हैं।

परिस्थिति–2 : श्यामा की कथा

श्यामा समझ नहीं पाती कि ऐसा क्यों होता है ? वह सुबह से उठकर ढेर सारा काम अकेले ही करती है। गाय लेकर जंगल में जाती है। किसी को कोई परेशानी नहीं होती है। वह भी अपने भाई रवि की तरह स्कूल जाना चाहती है। माँ, पिताजी, दादा सब यही कहते हैं, ''इतनी दूर लड़की जाति को पढ़ने नहीं भेजेंगे।'' बस पाँचवीं तक गाँव के स्कूल में पढ़ा लिया इतना बहुत है। पता नहीं ऐसा क्यों होता है। उसे याद है, चाची जब चटनी के लिए आम मंगाती तो वह दौड़कर जाती और झट से तोड़कर ले आती। गाँव के मास्टर जी कहते, ''ये तो हिरणी है।'' पर उसे एक बार भी दौड़ प्रतियोगिता में भाग लेने नहीं दिया गया। कोई पूछता है, तो पिताजी यही कह देते कि गाँव में मध्य विद्यालय नहीं रहने के कारण उसे नहीं पढ़ा रहे हैं। जबकि श्यामा को पता है कि वह यह सोचते हैं कि पढ़-लिखकर भी तो यह चूल्हा ही फूँकेगी। अब तो पिताजी श्यामा की अम्मा से एक दिन उसके ब्याह करने की बात कर रहे थे।

परिस्थिति–3 : गोविन्द का बड़ा होना

सफापुर गाँव में गोविन्द नाम का एक 13 वर्षीय लड़का हैं। वह आठवीं कक्षा में पढ़ता है। उसके माता-पिता मजदूरी करते हैं। उसके दो छोटे भाई-बहन है। दिनभर खेतों में मजदूरी के कारण उसकी माँ थक जाती है। इस कारण कभी-कभी वह घर का काम नहीं कर पाती। उसके माता-पिता में झगड़ा भी हो जाता है। इस झगड़े में कभी माँ की पिटाई भी हो जाती है। गोविन्द को यह अच्छा नहीं लगता। वह माँ की मदद करने के लिए घर के कई काम करता है जैसे– जलावन की लकड़ी लाना, पानी भरना, बरतन साफ करना, झाड़ू लगाना। माँ के घर लौटने के पहले वह सब्ज़ी बना कर भी रख लेता है। घर के काम के कारण वह कभी-कभी दोस्तों के साथ खेलने भी नहीं जा पाता है। इस कारण उसके दोस्त भी उसे चिढ़ाते हैं। वह सोचता है क्या लड़कों का घर का काम करना ठीक नहीं है?

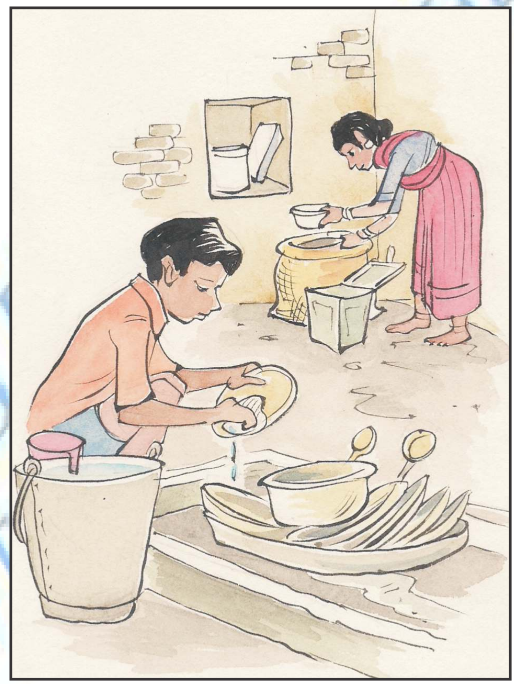

ऊपर के तीनों उदाहरणों को पढ़ने के बाद लगता है कि हम अलग-अलग तरीके से सयाने होते हैं और हमारे बड़े होने के ढंग में भी फर्क हो सकता है। इसी प्रकार जब हम अपने माता-पिता या बड़े बुजुर्गों से बात करें, तो पाएँगे कि उनके बचपन और हमारे बचपन में भिन्नता है। अर्थात् उनके बड़े होने के तरीकों में अन्तर हो सकता है। बड़े होने के अनुभवों के पीछे कई सामाजिक धारणाएँ हैं, जिन पर हमें विचार करना चाहिए।

1. अगर आप श्यामा की जगह पर होते तो क्या करते ?
2. श्यामा के परिवार की सोच का श्यामा के जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है ?
3. शबाना, जावेद, श्यामा और गोविन्द के जीवन में किस तरह का फर्क है ?
4. गोविन्द के दोस्त उसे क्यों चिढ़ाते हैं ? क्या उनका चिढ़ाना उचित है ?
5. आप गोविन्द के दोस्त होते तो क्या करते ?

?

6. पीछे दिए गए परिस्थितियों के आधार पर आप किस रूप में बड़ा होना पसन्द करेंगे और क्यों ?

?

कैसे तय होती है, हमारी भूमिका

जैसे कि पहले ही चर्चा हो चुकी है कि सामाजिक लिंग से हमारे जीवन की कई बातें तय होती हैं। आओ देखें ये कैसे होता है।

सूची बनाइए–

लड़कियों द्वारा पहने जाने वाले कपड़े	लड़कों द्वारा पहने जाने वाले कपड़े

लड़कियों के खेलने के सामान	लड़कों के खेलने के सामान

1. लड़के एवं लड़कियों के पहनावे और खिलौने में फर्क क्यों है? चर्चा करें।

?

इस सूची से स्पष्ट होता है कि समाज लड़के और लड़कियों में अन्तर करता है। यह अन्तर उसके पहनने के कपड़े और खेलने वाले खिलौनों में भी स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। उदाहरण के लिए उन्हें खेलने के लिए भिन्न-भिन्न खिलौने दिए जाते हैं। आपने गौर किया होगा कि लड़कों को अक्सर खेलने के लिए कारें दी जाती हैं, और लड़कियों को गुड़िया। बचपन में इन खिलौनों को देने का भी एक मतलब होता है। ये खिलौने इस बात को दर्शाने के माध्यम होते हैं कि बड़े होकर वे जब स्त्री या पुरुष होंगे तो उनका जीने का तरीका अलग-अलग होगा।

बचपन से लड़के-लड़कियाँ समाज द्वारा तय की गयी पुरुष व स्त्री की भूमिकाओं को सहज रूप से ग्रहण कर लेते हैं। धीरे-धीरे वे सोचने लगते हैं कि यह तो उनके प्राकृतिक गुण हैं। जीवन भी उसी आधार पर जीना चाहिए। अगर गहराई से विचार करें तो यह अन्तर प्रायः प्रतिदिन की छोटी-छोटी बातों में देखने को मिलती है। लड़कियों को कैसे कपड़े पहनने चाहिए, लड़के को रौबदार आवाज में बात करनी चाहिए आदि, ये सब बताने भर के तरीके हैं कि जब वे बड़े होकर स्त्री या पुरुष बनेंगे तो उनकी विशिष्ट भूमिकाएँ होंगी। बाद के जीवन में ये सारी चीजें तय करती हैं कि आप कौन से विषय पढ़ेंगे? आपके व्यवसाय क्या होंगे? आपके जीने के तरीके क्या होंगे? यह सब सामाजिक रूप से तय होता है।

माँ के द्वारा किया गया कार्य

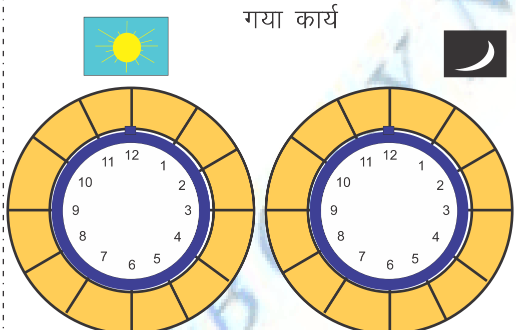

पिताजी के द्वारा किया गया कार्य

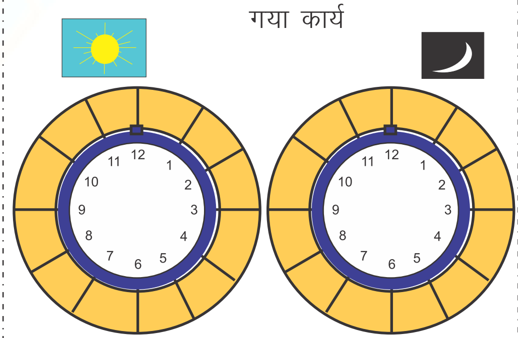

ऊपर दी गई घड़ियों के चित्र के बाहर उठने से लेकर सोने तक की दिनचर्या दर्शाए।

1. आपके घर के ज़्यादातर काम कौन करता है? और क्यों?

?

घरेलू कार्य का मूल्य

दूसरे समाजों की तरह अपने समाज में भी पुरुषों और स्त्रियों की भूमिकाओं और उनके काम के महत्त्व को समान नहीं समझा जाता है। पुरुषों और स्त्रियों का दर्ज़ा एक जैसा नहीं होता। आइये देखते हैं कि पुरुषों और स्त्रियों के द्वारा किए जाने वाले कामों में यह असमानता कैसे है ?

केन्द्रीय सांख्यिकी संगठन के आँकड़ें

राज्य	वेतन के साथ काम	वेतन के साथ काम	बिना वेतन के काम	बिना वेतन के काम	काम के कुल घंटे	काम के कुल घंटे
	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष
	कार्य के घंटे (प्रति सप्ताह)	कार्य के घंटे (प्रति सप्ताह)	कार्य के घंटे (प्रति सप्ताह)	कार्य के घंटे (प्रति सप्ताह)	कार्य के घंटे (प्रति सप्ताह)	कार्य के घंटे (प्रति सप्ताह)
हरियाणा	23	38	30	2	53	40
तमिलनाडु	19	40	35	4	54	44

ऊपर के आँकड़े और अपने उत्तर पर गौर करने पर पता चलता है कि अधिकांश महिलाएँ पुरुषों से ज़्यादा काम करती हैं। पर वास्तविकता यह है कि इतना काम करने के बावजूद हम यह सोचते हैं कि घरेलू काम भी क्या कोई काम है? घर के काम की मुख्य जिम्मेदारी स्त्रियों की होती है जैसे– घर की देखभाल संबंधी कार्य, परिवार का ध्यान रखना– विशेषकर बच्चों, बुजुर्गों और बीमारों का। फिर भी जो काम घर के अन्दर किया जाता है, उसे काम के रूप में पहचान नहीं मिलती। इसे ऐसा समझ लिया जाता है कि ये तो औरतों के ही काम हैं। इसके लिए किसी को कोई खर्च नहीं करना पड़ता इसलिए समाज में इन कार्यों को अधिक महत्त्व नहीं दिया जाता है। इस सोच के चलते महिलाओं को पुरुषों की तुलना में कमतर माना जाता है।

क्या इन कामों का कोई मूल्य नहीं?

बहुत से घरों में विशेषकर शहरों और नगरों में लोगों को घरेलू काम के लिए रखा जाता है। वे बहुत सारे काम करते हैं जैसे– झाड़ू-पोछा करना, कपड़े और बर्तन धोना, खाना पकाना, छोटे-छोटे बच्चों और बुज़ुर्गों की देखभाल करना आदि। इनमें ज़्यादातर घरेलू कामगार औरतें होती हैं। कभी-कभी इन कार्यों के लिए छोटे लड़के और लड़कियों को भी रखा जाता है। घरेलू कामों को ज़्यादा महत्त्व नहीं दिया जाता इसलिए इन कामों के बदले जो मज़दूरी दी जाती है, वह भी सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम मज़दूरी से काफी कम होती है। एक घरेलू कामगार का काम सुबह पाँच बजे से शुरू होता है और देर रात तक चलता रहता है। इतनी जी-तोड़ मेहनत करने के बावजूद उनके साथ सम्मानजनक व्यवहार नहीं किया जाता है। वास्तव में जिसे हम घरेलू काम कहते हैं, वह कोई एक नहीं बल्कि कई कामों का मिश्रण होता है – झाड़ू लगाना, कपड़े साफ करना, फर्श साफ करना, खाना पकाना इत्यादि।

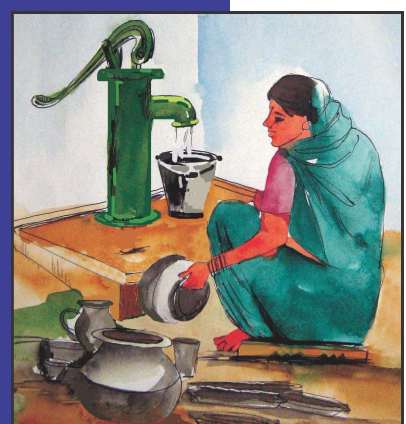

ग्रामीण इलाकों में इन कामों के अलावा महिलाएँ दूर से पीने का पानी, जलावन के लिए लकड़ियाँ भी लाती हैं। वे पशुओं की देखभाल तथा खेतों में काम आदि भी करती हैं। ये ऐसे काम हैं, जिनमें काफी शारीरिक श्रम की आवश्यकता होती है। ये काम शरीर को थकाने वाले होते हैं, जिसे अक्सर नज़रअंदाज़ कर दिया जाता है।

सामाजिक लिंगभेद अर्थात् स्त्री और पुरुष में फर्क समाज में बहुत गहरा प्रभाव छोड़ता है। यही कारण है कि लड़कियाँ शिक्षा से वंचित रह जाती हैं। उनके स्वास्थ्य पर भी ध्यान नहीं दिया जाता। इस कारण स्त्रियों में खून की कमी एवं कमजोरी का पाया जाना एक आम बात है। एक तरफ काम का बोझ अधिक है, तो दूसरी तरफ मौके कम मिलते हैं, ध्यान भी कम दिया जाता है। इस तरह से देखें तो दोनों ओर से असमानताएँ हैं। आगे के पाठ में हम चर्चा करेंगे कि इस सामाजिक असमानता की स्थिति को बदलने के लिए क्या-क्या किया जा सकता है।

अभ्यास

1. **सामान्यतः किसी घर में इन कार्यों को लड़का या लड़की कौन करता है?**
   (अ) मेहमान के लिए एक गिलास पानी लाना।
   (ब) माँ के बीमार होने पर डॉक्टर को बुलाना।
   (स) घर के खिड़की दरवाजे की सफाई करना।
   (द) पिताजी की मोटर साइकिल साफ करने में मदद करना।
   (य) बाज़ार से चीनी खरीदना।
   (र) किसी आगंतुक के आने पर दरवाजा खोलना।
2. आपके परिवार या आस-पड़ोस में क्या लड़कियों और लड़कों में भेद होता है? आपकी समझ से यह भेद किस प्रकार का होता है ?
3. महिलाओं की तुलना में पुरुषों का काम, क्या ज़्यादा मूल्यवान होता है? अगर नहीं तो क्यों?
4. घरेलू मज़दूरी करने वाली महिलाओं से बातचीत कर उनके कार्यों का विवरण,काम के घंटे, समस्याएँ एवं मज़दूरी आदि की सूची तैयार करें।
5. अगर आपकी माँ घर का काम दो दिनों के लिए आपको सौंप दे, तो उन कार्यों को करने में क्या समस्याएँ उत्पन्न हो सकती है ?